चलो पीपनी बनाएँ
पढ़ना है समझना

**प्रथम संस्करण :** अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930

**पुनर्मुद्रण :** दिसंबर 2009 पौष 1931



**PD 10T NSY**

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)
978-81-7450-892-8

**पुस्तकमाला निर्माण समिति**

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

**सदस्य-समन्वयक** – लतिका गुप्ता

**चित्रांकन** – निधि वाधवा

**सज्जा तथा आवरण** – निधि वाधवा

**डी.टी.पी. ऑपरेटर** – अर्चना गुप्ता, अंशुल गुप्ता, सीमा पाल

**आभार ज्ञापन**

प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलपमेंट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

**राष्ट्रीय समीक्षा समिति**

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफ़ेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डॉ. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुज़हत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए, मथुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

*बरखा* क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। *बरखा* की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। *बरखा* बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए '*बरखा*' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। इस पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। *बरखा* से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक *बरखा* को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।



**एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय**

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे, बनाशंकरी III स्टेज, बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी, कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स, मालीगाँव, गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2674869

**प्रकाशन सहयोग**

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजाकुमार
मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य संपादक : श्वेता उप्पल
मुख्य व्यापार प्रबंधक : गौतम गांगुली

चलो पीपनी बनाएँ
बबली
मदन
नाज़िया
जीत

2

एक दिन बबली बहुत खुश थी।
वह सारे घर में पी-पी करती घूम रही थी।
उसने अपने लिए एक पीपनी बनाई थी।
पीपनी में से बड़े ज़ोर की आवाज़ निकलती थी।

नाज़िया और मदन उसके घर आए थे।
मदन का मन पीपनी बजाने को कर रहा था।
उसने बबली से पीपनी माँगी।
बबली ने पीपनी देने से मना कर दिया।

मदन बोला कि मुझे पीपनी बनाना सिखा दो।
नाज़िया भी पीपनी बनाना सीखना चाहती थी।
बबली सिखाने के लिए मान गई।
वह सबको लेकर घर के बाहर गई।

बबली ने सबसे आम की गुठलियाँ ढूँढ़ने के लिए कहा।
बाहर आम के बहुत सारे छोटे-छोटे पौधे दिख रहे थे।
कई पौधे गुठलियों में से निकले हुए थे।
सब आम की गुठलियाँ ढूँढ़ने में जुट गए।

बबली ने समझाया कि आम की कैसी गुठली चाहिए।
गुठली में से छोटा-सा पौधा निकला होना चाहिए।
सबसे पहले नाज़िया को आम की वैसी गुठली मिली।
फिर मदन और जीत को भी गुठलियाँ मिल गईं।

बबली ने सबसे गुठलियाँ धोने के लिए कहा।
आँगन में एक बाल्टी में पानी रखा हुआ था।
सबने बाल्टी में डालकर अपनी गुठली साफ़ की।
सबको इकट्ठे बाल्टी में हाथ डालने में बड़ा मज़ा आया।

बाल्टी का पानी गंदा हो गया था।
सबने फिर नल पर अपनी गुठली धोयी।
नल की धार में गुठली का सारा कचरा निकल गया।
सबकी गुठलियाँ एकदम साफ़ हो गईं।

बबली ने फिर गुठली का छिलका निकालने को कहा।
उसने एक गुठली का छिलका निकाल कर दिखाया।
सबने अपनी-अपनी गुठली के छिलके निकाल लिए।
छिलकों के अंदर से एक और गुठली निकल आई।

सब अंदर की गुठली को ध्यान से देखने लगे।
गुठली में से आम की खुशबू आ रही थी।
हर गुठली में से छोटा-सा पौधा निकला हुआ था।
सबने धीरे-से उस पौधे को अलग किया।

बबली ने सबसे गुठलियाँ घिसने के लिए कहा।
बबली ने समझाया कि गुठली को धीरे-से घिसना चाहिए।
गुठली तब तक घिसो जब तक दो फाँकें न दिखने लगें।
बबली ने एक गुठली घिसकर दिखाई।

सब पत्थर पर अपनी गुठलियाँ घिसने लगे।
मदन ने अपनी गुठली बहुत धीरे घिसी।
नाज़िया ने अपनी गुठली ज़ोर-ज़ोर से घिसी।
जीत ने भी गुठली घिस ली।
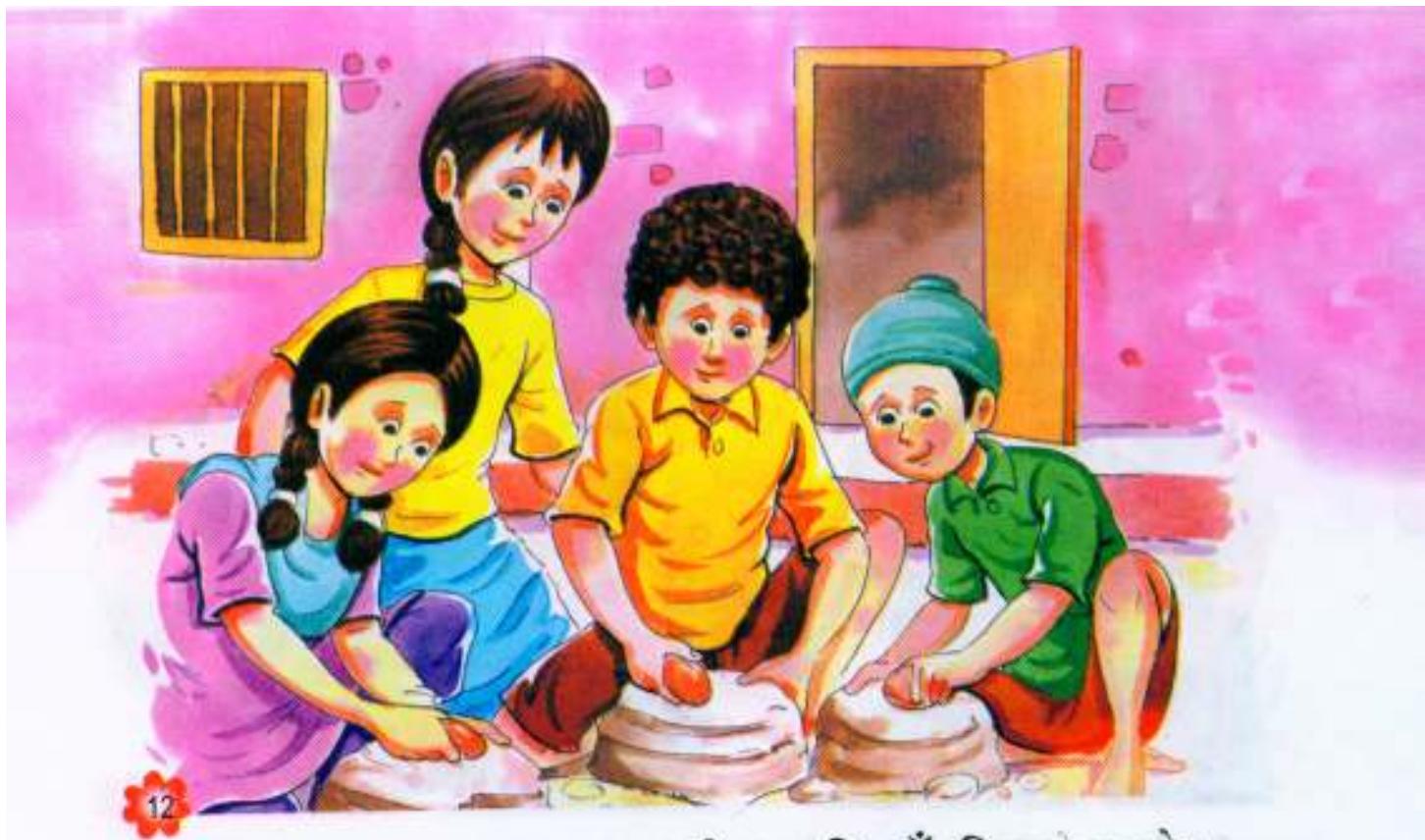
सबकी गुठलियों में दो फाँकें दिखने लगीं।
बबली ने बताया कि पीपनी बन गई थी।
उसने सबकी पीपनी हाथ में लेकर देखी।
बबली ने मदन की पीपनी थोड़ी और घिसी।

बबली ने पीपनी में फूँकने के लिए कहा।
मदन अपनी पीपनी पी-पी करके बजाने लगा।
वह पी-पी करते हुए भागा।
नाज़िया की पीपनी तो बजी ही नहीं।

बबली ने नाज़िया से दूसरी गुठली लाने के लिए कहा।
नाज़िया एक और गुठली लेकर आयी।
उसने अपनी गुठली को धोया और घिसा।
इस बार नाज़िया की पीपनी बज गई।

नाज़िया ने खूब ज़ोर से पीपनी बजायी।
मदन भी ज़ोर-ज़ोर से पीपनी बजा रहा था।
जीत की पीपनी भी बज रही थी।
सबने खुश होकर अपनी-अपनी पीपनी बजायी।
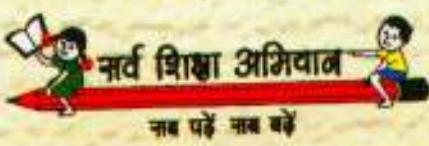
स्तर 1
स्तर 2
स्तर 3
स्तर 4
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें
2091
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING
रु. 10.00